पाठ ०९: राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद (तुलसीदास)

प्रश्न-उत्तर

रचना से संवाद - मेरे उत्तर मेरे तर्क

१. निम्नलिखित प्रश्नों के सटीक उत्तर चुनिए और यह भी बताइए कि आपको ये उत्तर उपयुक्त क्यों लगते हैं?

प्रश्न १. "पितु समेत कहि कहि निज नामा। लगे करन सब दंड प्रनामा।।" यह पंक्ति सभा में उपस्थित लोगों की किस मनःस्थिति को दर्शाती है?

(क) आदर और सम्मान

(ख) भक्ति और श्रद्धा

(ग) भय और शिष्टाचार

(घ) प्रेम और सहिष्णुता

- **तर्क (उपयुक्तता):** परशुराम का भयानक और क्रूर वेष देखकर सभा में उपस्थित सभी राजा अपने प्राणों के भय से पूरी तरह व्याकुल हो गए थे। वे स्वेच्छा से आदर नहीं दे रहे थे, बल्कि मुनि के कोप से बचने के लिए डर के वश होकर शिष्टाचार के नाते अपना और अपने पिताओं का नाम पुकारकर दंडवत् प्रणाम कर रहे थे।

प्रश्न २. "जनक बहोरि आइ सिरु नावा। सीय बोलाइ प्रनामु करावा" पंक्ति से राजा जनक के व्यवहार की कौन-सी विशेषता उद्घाटित होती है?

(क) संवेदनशीलता

(ख) शिष्टता

(ग) सहनशीलता

(घ) उदासीनता

- **तर्क (उपयुक्तता):** राजा जनक मिथिला के मर्यादित शासक और एक कुशल पिता हैं। सभा में भयंकर कोलाहल और क्रोध का वातावरण होने के बावजूद, वे अपनी राजकीय और सामाजिक शिष्टता का पालन करते हुए मुनि के चरणों में सिर झुकाते हैं और अपनी पुत्री से भी परंपरा का निर्वहन कराते हैं।

प्रश्न ३. "अति रिस बोले बचन कठोरा।" जनक के प्रति परशुराम के कठोर वचन बोलने का मूल कारण था—

(क) उचित आदर-सत्कार न मिलना

(ख) जनक द्वारा समाचार छिपाना

(ग) शिव-धनुष का खंडित होना

(घ) अन्य राजाओं की सभा में उपस्थिति

- **तर्क (उपयुक्तता):** परशुराम भगवान शिव के परम भक्त थे। स्वयंवर के मंच पर अपने आराध्य देव के पिनाक (शिव-धनुष) को दो टुकड़ों में टूटा हुआ देखना ही उनके तीव्र रोष और कठोर वचनों का मुख्य व एकमात्र कारण था।

प्रश्न ४. राम का कथन "होइहि केउ एक दास तुम्हारा" उनके व्यक्तित्व की किस विशेषता को दर्शाता है?

(क) कूटनीति और चतुराई

(ख) विनम्रता और मर्यादा

(ग) त्याग और समर्पण

(घ) दृढ़ता और आत्मविश्वास

- **तर्क (उपयुक्तता):** श्रीराम सर्वशक्तिमान होने के बावजूद घोर क्रोध में तमतमाए परशुराम के सामने अत्यधिक विनीत भाव से स्वयं को उनका एक तुच्छ 'दास' (सेवक) कहते हैं। यह कथन उनके मर्यादित, धीर-गंभीर और परम विनम्र व्यक्तित्व को उजागर करता है।

प्रश्न ५. "सुनि मुनि बचन लखन मुसुकाने। बोले परसुधरहि अपमाने।।" लक्ष्मण के मुसकराने और उपहास भरे वचनों का क्या कारण था?

(क) वे सभा में अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करना चाहते थे।

(ख) उन्हें राम के प्रति अपना प्रेम प्रदर्शित करना था।

(ग) वे परशुराम की शक्ति से अनभिज्ञ थे।

(घ) वे परशुराम को चुनौती देना चाहते थे।

- **तर्क (उपयुक्तता):** लक्ष्मण वीर और क्षत्रिय स्वभाव के ओजस्वी युवक हैं। वे परशुराम के अहंकारपूर्ण वचनों (कि सभी राजा मारे जाएँगे) को क्षत्रिय समाज का अपमान मानते हैं और उनके घमंड को तोड़ने के लिए व्यंग्यपूर्वक मुस्कुराते हुए उन्हें सीधे चुनौती देते हैं।

मेरी समझ मेरे विचार

प्रश्न १. "अरध निमेष कलप सम बीता" पंक्ति का भाव स्पष्ट करते हुए बताइए कि कविता में यह किसके संदर्भ में कहा गया है और क्यों?

- **उत्तर:**
  - **भावार्थ:** इस पंक्ति का भाव यह है कि अत्यधिक डर, व्याकुलता और मानसिक पीड़ा की स्थिति में मनुष्य के लिए आधा क्षण (पलक झपकने का आधा समय) भी एक कल्प (करोड़ों वर्ष या एक पूरे युग) के समान भारी और अत्यधिक लंबा प्रतीत होने लगता है।
  - **संदर्भ और कारण:** कविता में यह संदर्भ **माता सीता (जानकी) के लिए** कहा गया है। परशुराम के अत्यंत उग्र स्वभाव, उनके भयानक फरसे और राजा जनक को दी गई राज्य नष्ट करने की धमकी को सुनकर सीता जी भीतर से अत्यधिक भयभीत हो गई थीं। स्वयंवर की सफलता के बाद अचानक उत्पन्न हुए इस जानलेवा संकट और श्रीराम की सुरक्षा की शंका के कारण उनके लिए वह एक-एक पल काटना एक युग के समान कष्टकारी हो गया था।

प्रश्न २. "सो बिलगाउ बिहाइ समाजा। न त मारे जैहहिं सब राजा।।" पंक्ति के आधार पर बताइए कि परशुराम द्वारा दी गई इस चेतावनी का सभा में उपस्थित राज-समाज पर क्या प्रभाव पड़ा होगा? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

- **उत्तर:** परशुराम की इस भयानक चेतावनी का सभा में उपस्थित राज-समाज पर अत्यंत गहरा, भयभीत करने वाला और विघटनकारी प्रभाव पड़ा:
    - **राजाओं का भय:** अधिकांश राजा जो पहले ही भयभीत थे, वे थर-थर काँपने लगे और परशुराम के प्रचंड क्रोध से अपने प्राण बचाने के उपाय सोचने लगे।
    - **कुटिल राजाओं का हर्ष:** सभा में उपस्थित जो ईर्ष्या रखने वाले कुटिल राजा थे, वे मन ही मन खुश हो रहे थे कि अब धनुष तोड़ने वाले (राम-लक्ष्मण) पर परशुराम का कहर टूटेगा और वे इस विनाश का आनंद ले सकेंगे।
    - **जनता की व्यग्रता:** सुर, मुनि और जनकपुर के सामान्य नर-नारी भारी मानसिक त्रास से घिर गए कि अब इस स्वयंवर सभा का अंत किसी भीषण रक्तपात में न बदल जाए।

प्रश्न ३. आपकी दृष्टि में परशुराम के क्रोध को शांत करने के लिए राम का 'विनय' का मार्ग उचित है या लक्ष्मण के 'तर्क' का? अपने उत्तर का उचित कारण और तर्क भी प्रस्तुत कीजिए।

- **उत्तर:** मेरी दृष्टि में परशुराम के अविवेकपूर्ण क्रोध को शांत करने के लिए **श्रीराम का 'विनय' (विनम्रता) का मार्ग ही पूर्णतः उचित, तार्किक और सर्वश्रेष्ठ है।**
    - **कारण और तर्क:** क्रोध एक ऐसी अग्नि है जिसमें यदि उग्रता या व्यंग्य रूपी घी डाला जाए (जैसा लक्ष्मण के तीखे तर्कों ने किया), तो वह और अधिक धधक उठती है और विनाश का कारण बनती है। क्रोधी व्यक्ति का विवेक नष्ट हो जाता है, उसे शांत करने के लिए केवल श्रीराम जैसी शीतल, मर्यादित और विनीत वाणी की आवश्यकता होती है। लक्ष्मण के तर्कों ने परशुराम के क्रोध को बढ़ाया, जबकि श्रीराम के शांत स्वरूप, विनय और मधुर वचनों ने अंततः परशुराम के अहंकार को तोड़कर उनके क्रोध को पूरी तरह शांत कर दिया। कलात्मक दृष्टि से भी शांति ही क्रोध की एकमात्र औषधि है।

प्रश्न ४. 'हैटं न हरषु बिषादु कछु बोले श्रीरघुबीरु।।' श्री राम के हृदय में न हर्ष था, न विषाद। यह उनके व्यक्तित्व के किन गुणों को दर्शाता है? उनका भावनात्मक संतुलन इस पूरे पाठ में उन्हें अन्य पात्रों से अलग कैसे स्थापित करता है?

- **उत्तर:** यह अद्भुत पंक्ति श्रीराम के **स्थितप्रज्ञ, समदर्शी, परम मर्यादित और अद्वितीय भावनात्मक संतुलन** के गुणों को दर्शाती है।
    - **व्यक्तित्व का अंतर:** जहाँ एक ओर परशुराम अपने अहंकार और आराध्य के धनुष टूटने पर अत्यधिक 'क्रोध' और नियंत्रण खो देने की मुद्रा में हैं, और दूसरी ओर लक्ष्मण अपनी वीरता के उत्साह में 'उग्र और व्यंग्यात्मक' हो रहे हैं, वहीं श्रीराम इन दोनों अतिवादी भावनाओं के मध्य बिल्कुल शांत खड़े हैं। उन्हें न तो शिव-धनुष तोड़ने का कोई अहंकार (हर्ष) है और न ही परशुराम की भीषण धमकियों का कोई भय या दुख (विषाद) है। उनका यह स्थिर भावनात्मक संतुलन उन्हें पूरी सभा में एक कुशल नेतृत्वकर्ता, मर्यादा पुरुषोत्तम और ईश्वर तुल्य गंभीर पात्र के रूप में सबसे अलग और सर्वोच्च स्थापित करता है।

मेरी कल्पना मेरे अनुमान

प्रश्न १. कल्पना कीजिए कि आप जनक की सभा में उपस्थित एक राजा हैं। परशुराम जी के आगमन से लेकर उनके गमन तक की कथा अपने शब्दों में लिखिए।

- **उत्तर:** "मैं उस ऐतिहासिक दिन राजा जनक की भव्य स्वयंवर सभा में अग्रिम आसन पर विराजमान था। जैसे ही सुकुमार कुमार श्रीराम ने शिव-धनुष को उठाया और वह दो खंडों में टूट गया, पूरी सभा जयकारों से गूँज उठी। परंतु कुछ ही पलों में, उस भयंकर टंकार को सुनकर भृगुकुल भूषण परशुराम ने सभा में प्रवेश किया। उनका भयानक फरसा और लाल आँखें देखकर हम सभी राजा डर के मारे काँप उठे और अपना नाम पुकारकर उनके पैरों में गिर गए। उन्होंने जब टूटे धनुष को देखा, तो वे राजा जनक पर दहाड़े और पूरे राज्य को नष्ट करने की धमकी दी। जनक जी भय से मौन रहे। तभी श्रीराम ने अपनी अद्भुत कोमल वाणी से स्वयं को उनका दास कहा, परंतु कुमार लक्ष्मण ने अपनी तीखी मुस्कान और व्यंग्य बाणों से मुनि के क्रोध की आग को और भड़का दिया। पूरी सभा भय और रोमांच के चरम बिंदु पर थी। अंततः श्रीराम की गंभीर मर्यादा और विश्वामित्र की मध्यस्थता से मुनि का भ्रम दूर हुआ और वे शांत होकर वापस लौट गए।"

प्रश्न २. "अति डरु उतरु देत नृपु नाहीं। कुटिल भूप हरषे मन माहीं।।" जनक द्वारा डर से चुप रहने पर अन्य राजा मन में प्रसन्न क्यों हुए होंगे?

- **उत्तर:** यह प्रसंग मानव स्वभाव के एक अत्यंत कड़वे और संकीर्ण सत्य—**'परपीड़न' (दूसरों के दुख और लाचारी में स्वयं का सुख खोजना) तथा ईर्ष्या की भावना** को उजागर करता है। सभा में उपस्थित अधिकांश राजा अभिमानी थे और स्वयंवर में शिव-धनुष को हिला तक न पाने के कारण अपमानित महसूस कर रहे थे। जब उन्होंने देखा कि विजयी राजा जनक परशुराम के भय से थर-थर काँप रहे हैं और चुप हैं, तो उनके आहत अहंकार को एक संतुष्टि मिली। वे खुश थे कि जो स्वयंवर जनक के लिए उत्सव था, वह अब उनके लिए संकट बन गया है।

विधा से संवाद: कविता का सौंदर्य (अलंकार एवं नाट्य तत्व)

तुलसीदास की नाट्य-संवाद शैली की विशेषताओं को पुष्ट करने वाले प्रामाणिक काव्यात्मक उदाहरण:

- **राम की विनम्रता की अभिव्यक्ति:**
  "नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा।।"
- **परशुराम का रौद्र रूप और भयानक गर्जना:**
  "अति रिस बोले बचन कठोरा। कहु जड़ जनक धनुष कै तोरा।।"
- **लक्ष्मण का तार्किक व व्यंग्यात्मक प्रत्युत्तर:**
  "बहु धनुहीं तोरीं लरिकाई। कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाईं।।"
- **पौराणिक संदर्भ का समावेश:**
  "धनुही सम तिपुरारि धनु बिदित सकल संसार।।"
- **नाटकीयता और दृश्य बिंब का निर्माण:**
  "देखत भृगुपति बेषु कराला। उठे सकल भय बिकल भुआला।।"

भाव-पहचान एवं विश्लेषण

(क) पात्रों की मनःस्थिति और उसके मूल कारणों का चार्ट

भाव / मनःस्थिति	पाठ की सम्बद्ध काव्य-पंक्ति	पात्र (Character)	मनःस्थिति का वास्तविक कारण
चिंता	बिधि अब सँवरी बात बिगारी	सीता की माता सुनयना	पुत्री सीता के भविष्य और परशुराम के कोप से उत्पन्न विघ्न के प्रति आशंकित होना।
क्रोध	अति रिस बोले बचन कठोरा	मुनि परशुराम	अपने आराध्य शिव के पिनाक धनुष को खंडित देखना।
भय	अति डरु उतरु देत नृपु नाहीं	राजा जनक	परशुराम के भयानक वेष और राज्य को उलटने की भीषण धमकी के कारण।
संयम / विनम्रता	नाथ संभुधनु भंजनिहारा...	मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम	सभा को विनाश से बचाने और मुनि को शांत करने की इच्छा।
ईर्ष्या / कुटिलता	कुटिल भूप हरषे मन माहीं	सभा के अभिमानी राजा	जनक की लाचारी और राम पर आए संकट को देखकर आहत गर्व की संतुष्टि पाना।

(ख) विश्लेषण: "अति डरु उतरु देत नृपु नाहीं।"

1. **संदर्भ:** यह घटना उस समय की है जब परशुराम अत्यंत विकराल रूप धारण कर राजा जनक से धनुष तोड़ने वाले का नाम पूछते हैं और शीघ्र न बताने पर संपूर्ण राज-पाट नष्ट करने की धमकी देते हैं।
2. **विश्लेषण (मौन का कारण):** यहाँ राजा जनक का मौन कायरता का लक्षण नहीं है, बल्कि एक **अत्यंत विवेकपूर्ण और नीतिसम्मत निर्णय** है। क्रोधी व्यक्ति का मस्तिष्क काम करना बंद कर देता है। यदि जनक उस समय परशुराम के कठोर वचनों का उत्तर प्रतिवाद या तर्क से देते, तो मुनि का क्रोध और अधिक भड़क जाता, जिससे स्वयंवर सभा युद्धभूमि में बदल सकती थी। जनक ने परिस्थिति की गंभीरता को समझकर मौन रहना ही श्रेयस्कर समझा।
3. **निष्कर्ष:** इससे स्पष्ट होता है कि विकट और संकटपूर्ण परिस्थितियों में तात्कालिक प्रतिक्रिया देने के बजाय 'धीर मौन' धारण करना ही एक सच्चे और कुशल शासक की वास्तविक सूझबूझ का परिचायक है।

(ग) काव्य-पंक्ति और नाट्य भाव

- **पंक्ति:** *"रे नृप बालक काल बस बोलत तोहि न सँभार। धनुही सम तिपुरारि धनु बिदित सकल संसार।।"*
    - **चेहरे के भाव (क):** यदि मैं इसे मंच पर अभिनय करता, तो मेरे चेहरे पर **रौद्र रस (अत्यधिक क्रोध)** के भाव होते—आँखें बड़ी और लाल, तनी हुई भौंहें, ऊँचा स्वर और हाथ में फरसा उठाने की आक्रामक मुद्रा।
    - **पात्रों के प्रतिनिधि भाव (ख):** परशुराम (उग्रता/रौद्र), राजा जनक (गंभीरता/धैर्य), लक्ष्मण (वीरता/हास्य-व्यंग्य), राम (शांत/मर्यादा), अन्य राजा (कुटिलता/ईर्ष्या)।

विषयों से संवाद

प्रश्न १. सभा में परशुराम के प्रति राम के व्यवहार से उनकी विनम्रता, मर्यादा, धीर और उदात्त चरित्र के संबंध में पता चलता है जो किसी भी कुशल शासक के लिए आवश्यक है। आपको किन-किन परिस्थितियों में इन विशेषताओं का परिचय देना पड़ता है?

- **उत्तर:** एक छात्र और समाज के भावी नागरिक के रूप में मुझे निम्नलिखित वास्तविक परिस्थितियों में इन जीवन-मूल्यों का परिचय देना पड़ता है:
    1. **वाद-विवाद या प्रतियोगिताओं में:** जब कोई विपक्षी प्रतिभागी हमारे विचारों से असहमत होकर उग्र भाषा का प्रयोग करे, तब शांत रहकर तार्किक उत्तर देना।
    2. **पारिवारिक या विद्यालयी अनुशासन में:** जब माता-पिता या शिक्षक हमारी किसी भूल पर अत्यधिक क्रोधित हों, तब बहस करने के बजाय विनम्रता से अपनी बात कहना।
    3. **कक्षा प्रतिनिधि (मॉनिटर) के रूप में:** कक्षा के सहपाठियों के आपसी झगड़ों को शांत कराने के लिए धैर्य और निष्पक्षता बनाए रखना।

प्रश्न २. प्राचीन भारतीय समाज में वर-चयन के लिए स्वयंवर की प्रथा प्रचलित थी। ऐसी किसी एक पौराणिक-ऐतिहासिक घटना का वर्णन कीजिए।

- **उत्तर:** पौराणिक इतिहास में **महाभारत काल के 'द्रौपदी स्वयंवर'** का प्रसंग अत्यंत प्रसिद्ध है। पांचाल देश के राजा द्रुपद ने अपनी पुत्री द्रौपदी के विवाह के लिए एक अत्यंत कठिन शर्त रखी थी। सभा के मध्य एक ऊंचा खंभा था, जिसके शिखर पर एक चक्र में मछली घूम रही थी। स्वयंवर में आने वाले वीर को नीचे तेल के कड़ाहे (पानी के बर्तन) में केवल मछली का प्रतिबिंब (परछाई) देखते हुए ऊपर घूमती हुई मछली की आँख पर अचूक निशाना लगाना था। संसार के बड़े-बड़े राजा इसमें असफल रहे, परंतु पांडु-पुत्र अर्जुन ने अपनी एकाग्रता और अद्भुत धनुर्विद्या के बल पर उस लक्ष्य को भेदकर द्रौपदी से विवाह किया था।

सृजन (Creative Writing)

१. माता सुनयना और सीता के मध्य चल रहा कल्पित 'मौन संवाद'

(संकेत: आँखों ही आँखों में भावनाओं का आदान-प्रदान)

माता सुनयना (आँखों के अश्रुपूर्ण संकोच से): "हे पुत्री जानकी! विधाता ने हमारे भाग्य में यह कैसा संकट लिख दिया। रघुवीर ने धनुष तोड़कर प्रसन्नता दी थी, पर अब मुनि परशुराम का यह काल रूपी फरसा हमारी खुशियों को निगलने आ गया है। मेरा हृदय काँप रहा है।" **सीता जी (शांत और दृढ़ दृष्टि से):** "हे माता! व्याकुल न होइए। यद्यपि मुनि के वचनों से मेरा भी एक-एक पल युग के समान भारी बीत रहा है, परंतु मुझे रघुनाथ की दिव्य शक्ति और उनके शांत संतुलित स्वभाव पर पूर्ण विश्वास है। वे अपनी मर्यादा से इस विकराल क्रोध की अग्नि को अवश्य शांत कर देंगे।"

२. सीता जी के दृष्टिकोण से पूरी घटना का सविस्तार वैचारिक विश्लेषण

सीता के मन के भाव: जब मैं स्वयंवर के ओट (परदे) के पीछे खड़ी इस अद्भुत और भयानक घटना को देख रही थी, तो मेरा हृदय कई विपरीत भावनाओं के झूले में झूल रहा था। जैसे ही मुनि परशुराम ने क्रोध में भरकर मेरे पिता जनक

को डांटा, तो मुझे अपने पिता की लाचारी पर अत्यंत दुख और डर (शंका) महसूस हुआ। परंतु अगले ही क्षण जब प्रभु श्रीराम ने अत्यंत मधुर वाणी में स्वयं को मुनि का दास कहा, तो मेरे मन को एक असीम सुरक्षा और शांति मिली। इसके बाद जब भाई लक्ष्मण ने अपने तीखे व्यंग्य बाणों से मुनि के क्षत्रिय-मर्दन के अहंकार को चुनौती दी, तो मुझे लक्ष्मण के इस अदम्य भ्रातृ-प्रेम और निर्भीकता पर मन ही मन गर्व भी हो रहा था और हँसी भी आ रही थी, परंतु मुनि के बार-बार फरसा उठाने पर एक अनजानी शंका भी घेर लेती थी। यह पूरी घटना सिद्ध करती है कि जहाँ अहंकार और क्रोध विनाश की ओर ले जाते हैं, वहीं मर्यादा और शांत विवेक ही हर संकट का अंतिम समाधान बनते हैं।

३. व्यक्तित्व की महत्वपूर्ण बातों को दर्शाता हुआ प्रांजल 'आत्म-परिचय'

मेरा परिचय: "मैं भारतीय विद्या भवन, दिल्ली का कक्षा ९वीं का एक अनुशासित और निष्ठावान छात्र हूँ। मेरा व्यक्तित्व मर्यादा और विनम्रता के आदर्शों पर टिका है। मैं केवल शारीरिक बल को ही शक्ति नहीं मानता, बल्कि विपरीत परिस्थितियों में अपने मन को शांत और संतुलित रखना मेरी सबसे बड़ी आंतरिक शक्ति है। मैं कला, संगीत और हिंदी साहित्य के प्रति अगाध रुचि रखता हूँ। मेरा लक्ष्य जीवन में एक कुशल और समदर्शी नेतृत्वकर्ता बनना है, जो समाज के सभी वर्गों को समानता और भाईचारे के सूत्र में बाँध सके।"

भाषा से संवाद (व्याकरण खंड)

१. काव्यात्मक अलंकार एवं भाषा की विशेषताएँ

तुलसीदास की अवधी भाषा और रामचरितमानस की व्याकरणिक विशेषताओं के उदाहरण:

साहित्यिक विशेषता	विशेषता का अर्थ	पाठ से प्रामाणिक उदाहरण
अनुप्रास अलंकार	एक ही व्यंजन वर्ण की दो या अधिक बार आवृत्ति।	*अरि करनी करि करिअ लराई* ('क' और 'र' की आवृत्ति)
अतिशयोक्ति अलंकार	किसी बात को लोक-सीमा से बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कहना।	*अरध निमेष कलप सम बीता* (आधा क्षण कल्प बनना)
रूपक अलंकार	उपमेय पर उपमान का अभेद आरोप करना।	*पद सरोज मेले दोउ भाई* (चरण रूपी कमल)

२. बहुभाषिकता: अवधी शब्दों का खड़ी बोली रूप

पाठ का अवधी शब्द	खड़ी बोली हिंदी रूप (Standard Hindi)	मेरी प्रांतीय भाषा (व्यावहारिक रूप)
कोही	क्रोधी / अत्यधिक गुस्सा करने वाला	गुस्सैल
बेषु	वेष / पहनावा / रूप	पोशाक
मही	पृथ्वी / भूमि / धरती	ज़मीन
बेगि	शीघ्र / जल्दी / तुरंत	फटाफट
नृपु	राजा / भूपाल / महीप	सम्राट

३. लोक में भाषा: लोकोक्तियाँ एवं वाक्य प्रयोग

1. शब्द: राम

- **लोकोक्ति:** राम नाम जपना, पराया माल अपना।
- **अर्थ:** ऊपर से धार्मिक ढोंग करना परंतु भीतर से दूसरों का धन हड़पने की कुटिल चेतना रखना।
- **वाक्य प्रयोग:** "आजकल के पाखंडी बाबा समाज में *राम नाम जपते हैं और पराया माल अपना* करने की ताक में रहते हैं।"

2. शब्द: राजा

- **लोकोक्ति:** यथा राजा तथा प्रजा।
- **अर्थ:** जैसा देश का मुखिया या राजा होता है, वहाँ की जनता भी वैसी ही आचरण करने लगती है।
- **वाक्य प्रयोग:** "जब विद्यालय के प्रधानाचार्य ही अत्यंत अनुशासित और समयनिष्ठ हैं, तो सभी छात्र भी वैसे ही बन गए; सच है—*यथा राजा तथा प्रजा*।"

3. शब्द: बात

- **लोकोक्ति:** बात का धनी होना।
- **अर्थ:** अपने दिए गए वचन या संकल्प का पक्का होना।
- **वाक्य प्रयोग:** "हमारे स्वतंत्रता सेनानी अपने *बात के धनी थे*, जिन्होंने देश की आज़ादी के लिए अपने प्राणों का हँसते-हँसते बलिदान कर दिया।"

४. काव्यांश का प्रांजल गद्य-रूप

- **मूल चौपाई:**

"अति डरु उतरु देत नृपु नाहीं। कुटिल भूप हरषे मन माहीं।।
सुर मुनि नाग नगर नर नारी। सोचहिं सकल त्रास उर भारी।।"

- **मानक हिंदी गद्य-रूप (Prose Version):**

मुनि परशुराम के उस अत्यंत विकराल और कठोर वचनों के भयानक डर से राजा जनक के मुख से कोई उत्तर नहीं निकल पा रहा था। जनक की इस लाचारी को देखकर स्वयंवर सभा में उपस्थित अन्य सभी अभिमानी व कुटिल राजा अपने मन ही मन अत्यधिक प्रसन्न हो रहे थे। उस भयंकर संकट और होने वाले संभावित विनाश को देखकर देवता, मुनि, नाग और जनकपुर नगर के सभी नर-नारी अपने हृदय में भारी त्रास (भय) महसूस करते हुए व्याकुलतापूर्वक चिंता करने लगे थे।

५. गतिविधियों का पूर्ण ग्रिड

पाठ्यपुस्तक के कथनों के आधार पर सही पात्र का सत्यापन चार्ट:

पाठ में आया प्रमुख कथन	राम	लक्ष्मण	परशुराम	जनक	सुनयना
"शिव के धनुष को तोड़ने वाला आपका कोई दास ही होगा।"	[✓]	[ ]	[ ]	[ ]	[ ]
"विधाता ने बनी-बनाई बात बिगाड़ दी।"	[ ]	[ ]	[ ]	[ ]	[✓]

"सेवक वह होता है जो सेवा का काम करे।"	[ ]	[ ]	[✓]	[ ]	[ ]
"इस कारण ये सब राजा आए हैं।"	[ ]	[ ]	[ ]	[✓]	[ ]
"बचपन में हमने ऐसी बहुत-सी धनुहियाँ तोड़ डाली हैं।"	[ ]	[✓]	[ ]	[ ]	[ ]
"क्या आज्ञा है, मुझसे क्यों नहीं कहते?"	[✓]	[ ]	[ ]	[ ]	[ ]
"कहो जनक, किस कारण यह भीड़ है?"	[ ]	[ ]	[✓]	[ ]	[ ]
"इसी धनुष पर इतनी ममता क्यों!"	[ ]	[✓]	[ ]	[ ]	[ ]

६. मेरी पहेली (Riddles)

*पाठ के मूल शब्दों (**धनुष, समाचार, मन**) पर आधारित ज्ञानवर्धक पहेलियाँ:*

- **पहेली १ (धनुष):** "पिनाक मेरा नाम है, त्रिपुरारी की धरोहर हूँ, श्रीराम के छूते ही टूटा, परशुराम के कोप का कारण हूँ। बताओ कौन?"
  उत्तर: धनुष
- **पहेली २ (समाचार):** "देश-दुनिया की बातें लाता, सुबह-सुबह घर में आता, जनक ने जिसे मुनि को सुनाया, सुनकर भृगुपति का कोप जगाया। बताओ कौन?"
  उत्तर: समाचार
- **पहेली ३ (मन):** "चंचल मेरी काया है, क्षण में यहाँ क्षण में वहाँ जाता, राम से जुड़कर शांत हुआ, सब मोह-बंधन को बिसराता। बताओ कौन?"
  उत्तर: मन

Links और References

अध्याय के वैचारिक, भाषाई और दृश्य पक्षों को गहराई से आत्मसात करने के लिए पाठ्यपुस्तक में दी गई डिजिटल संदर्भ कड़ियाँ निम्नलिखित हैं:

- 🔗 **NCERT Official - राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद भाग १:** https://www.youtube.com/watch?v=7laq-BLnig4 — विषय विशेषज्ञों द्वारा चौपाई और दोहों के शास्त्रीय गायन का आधिकारिक वीडियो संदर्भ।
- 🔗 **NCERT Official - संवाद व्याख्या एवं नाट्य रूप:** https://www.youtube.com/watch?v=M7yZx2C0068 — बालकांड के इस प्रसंग की विस्तृत व्याख्यात्मक समीक्षा।
- 🔗 **गोस्वामी तुलसीदास जीवन वृत्तचित्र:** https://www.youtube.com/watch?v=oCLrWoky6UI — कवि तुलसीदास के साहित्यिक अवदान और उनके सृजनात्मक कौशल पर वृत्तचित्र।

- 🔗 **भारत सरकार का भाषाई पोर्टल:** https://shabd.education.gov.in/lexicon.jsp — 'धनुष' और 'भृगुपति' जैसे शब्दों की विभिन्न भारतीय भाषाओं (जैसे कमान, विल्, विल्लु) में तुलनात्मक प्रामाणिक कली।

Professional Worksheet - 01 (कक्षा - 9वीं)
पूर्णांक: 25
समय: 45 मिनट

Section A: वस्तुनिष्ठ प्रश्न (MCQs & Assertion-Reason)
प्रश्न १. परशुराम के घोर क्रोध के सम्मुख श्रीराम का स्वयं को उनका 'एक दास' कहना उनके किस जीवन-मूल्य को प्रतिपादित करता है?
(क) अपनी शक्ति का प्रदर्शन करना।
(ख) घोर संकट के समय भी अपनी सर्वोच्च विनम्रता और मर्यादा बनाए रखना।
(ग) लक्ष्मण को युद्ध के लिए उकसाना।
(घ) राजा जनक की लाचारी का उपहास उड़ाना।
प्रश्न २. "जैसे सोने मिलत सुहागा" और "पद सरोज मेले दोउ भाई" में क्रमशः कौन-से अलंकार प्रयुक्त हुए हैं?
(क) अतिशयोक्ति और अनुप्रास अलंकार
(ख) उपमा और रूपक अलंकार
(ग) अनुप्रास और उपमा अलंकार
(घ) रूपक और अतिशयोक्ति अलंकार

प्रश्न ३. कथन-कारण प्रश्न (Assertion-Reason):
- **कथन (A):** परशुराम के कोप को देखकर स्वयंवर सभा में उपस्थित सभी राजा अपने पिताओं के नाम के साथ अपना नाम पुकारकर दंडवत् प्रणाम कर रहे थे।
- **कारण (R):** वे परशुराम के प्रति अगाध भक्ति और श्रद्धा व्यक्त करना चाहते थे।

(क) कथन A सही है, परंतु कारण R गलत है।
(ख) कथन A गलत है, परंतु कारण R सही है।
(ग) कथन A सही व्याख्या करता है।
(घ) कथन A और कारण R दोनों सही हैं।

प्रश्न ४. काव्यांश के प्रमुख प्रसंगों का उनके सही भावों के साथ मिलान (Match the Following) कीजिए:

स्तंभ 'क' (काव्य प्रसंग) PDF	**स्तंभ 'ख' (सही मानसिक भाव)**
(1) कुटिल भूप हरषे मन माहीं	(अ) अत्यंत उग्र रौद्र रस और अहंकार
(2) बिधि अब सँवरी बात बिगारी	(ब) परपीड़क कुटिलता और ईर्ष्या का भाव

(3) उलटउँ महि जहँ लहि तव राजू	(स) स्थितप्रज्ञता और अनुपम भावनात्मक संतुलन
(4) हृदयं न हरषु बिषादु कछु	(द) पुत्री के भविष्य के प्रति गहरी चिंता और व्याकुलता

Section B: अतिलघु उत्तरीय प्रश्न (VSAQ - 1 अंक)

प्रश्न ५. गोस्वामी तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' महाकाव्य की रचना मुख्य रूप से किस भाषा में की है?

प्रश्न ६. "बहु धनुहीं तोरीं लरिकाई" यह व्यंग्य वचन परशुराम से किसने कहा था?

Section C: लघु उत्तरीय प्रश्न (SAQ - 2 अंक)

प्रश्न ७. परशुराम के अनुसार सच्चा 'सेवक' कौन होता है और शत्रुतापूर्ण कार्य करने वाले का क्या परिणाम होता है?

प्रश्न ८. "अरध निमेष कलप सम बीता" पंक्ति के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि सीता जी के लिए आधा क्षण एक युग के समान क्यों हो गया था?

Section D: दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (LAQ - 4 अंक)

प्रश्न ९. "क्रोध को केवल शांति और विवेक से ही जीता जा सकता है।" परशुराम के क्रोध के सम्मुख श्रीराम की 'विनम्रता' और लक्ष्मण के 'तीखे व्यंग्य' की प्रतिक्रियाओं का तुलनात्मक विश्लेषण करते हुए उत्तर दीजिए।

Section E: रचनात्मक/मूल्य आधारित प्रश्न (HOTS - 5 अंक)

प्रश्न १०. राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद में 'मर्यादा और वाणी के संयम' के महत्व को दर्शाया गया है। आज के आधुनिक छात्र जीवन में सोशल मीडिया या कक्षाओं में बढ़ते आपसी विवादों (Cyber-bullying/Agression) को रोकने के लिए 'वाणी के संयम' पर एक ५ सूत्रीय कार्य-योजना तैयार कीजिए।

Answer Key (Worksheet - 01)

1. **उत्तर:** (ख) घोर संकट के समय भी अपनी सर्वोच्च विनम्रता और मर्यादा बनाए रखना।
2. **उत्तर:** (ख) उपमा और रूपक अलंकार।
3. **उत्तर:** (क) कथन A सही है, परंतु कारण R गलत है (क्योंकि राजा आदर से नहीं बल्कि प्राणों के भय से प्रणाम कर रहे थे)।
4. **उत्तर मिलान:** (1) -> (ब), (2) -> (द), (3) -> (अ), (4) -> (स)।
5. **उत्तर:** तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' की रचना **अवधी भाषा** में की है।
6. **उत्तर:** यह व्यंग्य वचन कुमार **लक्ष्मण** ने परशुराम से कहा था।
7. **उत्तर:** परशुराम के अनुसार सेवक वही होता है जो निरंतर सेवा का कार्य करे। जो व्यक्ति शत्रु जैसा आचरण (जैसे शिव-धनुष तोड़ना) करता है, वह केवल लड़ाई (युद्ध) का ही अधिकारी होता है।
8. **उत्तर:** क्योंकि सीता जी परशुराम के प्रचंड और क्रूर स्वभाव से भली-भाँति परिचित थीं। धनुष टूटने के बाद उत्पन्न हुए इस घोर अनपेक्षित संकट काल में श्रीराम की सुरक्षा और अपने विवाह के भविष्य को लेकर वे इतनी व्याकुल थीं कि उनके लिए आधा क्षण भी एक युग (≈ 4 अरब वर्ष) के समान भारी लग रहा था।

9. **उत्तर:** इस प्रसंग में तुलसीदास ने एक ही परिस्थिति के प्रति दो विपरीत मानवीय स्वभाव दिखाए हैं। लक्ष्मण वीर रस से ओतप्रोत हैं; वे परशुराम के अहंकार को चुनौती देने के लिए 'धनुही' जैसे व्यंग्य बाणों का प्रयोग करते हैं, जिससे परशुराम का क्रोध और अधिक भड़क जाता है। इसके विपरीत, श्रीराम का उदात्त चरित्र है। वे न हरषे न बिषाद की मुद्रा में शांत खड़े रहते हैं और स्वयं को 'दास' कहकर मुनि के अहंकार को चोट पहुँचाए बिना उनका क्रोध शांत कर देते हैं। यह सिद्ध करता है कि क्रोध को केवल ठंडे विवेक और विनम्रता से ही जीता जा सकता है, उग्रता से नहीं।
10. **उत्तर (वाणी संयम कार्य-योजना):**
    - **१. 'सोचो और थमो' (Pause and Reflect):** किसी भी उग्र टिप्पणी या संदेश का तुरंत उत्तर देने के बजाय २ मिनट का मौन रखकर विचार करें।
    - **२. अपशब्दों का त्याग:** बातचीत या चैटिंग में 'कठोर वचनों' और अपमानजनक भाषा का प्रयोग पूर्णतः वर्जित हो।
    - **३. समानुभूति (Empathy):** सामने वाले की परिस्थिति और भावनाओं को समझकर आदरपूर्वक अपनी असहमति दर्ज कराना।
    - **४. रचनात्मक मध्यस्थता:** कक्षाओं में जब दो मित्रों के बीच विवाद हो, तो लक्ष्मण की तरह आग भड़काने के बजाय श्रीराम की तरह 'विनय' से बीच-बचाव करना।
    - **५. डिजिटल मर्यादा:** सोशल मीडिया पर किसी का उपहास उड़ाने वाले पोस्ट या मीम्स साझा न करने का सामूहिक संकल्प लेना।